मेन्स मास्टर

वह जो समुद्र पर शासन करता है

प्रसंग:

The Indian EXPRESS

* भारत का आर्थिक शिखर: पहली सहस्राब्दी के दौरान, भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 33%) के रूप में विकसित हुआ, आसपास के महासागरों पर इसके नियंत्रण के कारण मजबूत व्यापार नेटवर्क का आनंद ले रहा था। इस समृद्ध युग में चोलों जैसे शक्तिशाली हिंदू राज्यों का उदय हुआ, जिन्होंने अरब दुनिया के साथ व्यापार स्थापित किया और दक्षिण पूर्व एशिया में प्रवेश किया।

पृष्ठभूमि:

* प्राचीन समुद्री कौशल: दक्षिण भारत के शुरुआती समुद्री व्यापारियों से लेकर मौर्य जैसे साम्राज्यों तक, भारत ने समुद्री मामलों की गहरी समझ प्रदर्शित की। कौटिल्य के अर्थशास्त्र ने बंदरगाहों और बंदरगाहों का प्रबंधन करने वाले समर्पित विभागों के साथ समुद्री गतिविधि के महत्व पर प्रकाश डाला। यह प्रभुत्व फा-हिएन के 200-व्यापारी जहाज के हिंदू तीर्थयात्रियों को समुद्र पार ले जाने के विवरण से स्पष्ट है।

* पतन और प्रभुत्व: दूसरी सहस्राब्दी में पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंततः ब्रिटिश जैसी यूरोपीय शक्तियों के नौसैनिक प्रमुखता की ओर बढ़ने के कारण बदलाव देखा गया। इस समुद्री प्रभुत्व ने भारत की आर्थिक गिरावट में योगदान दिया, विशेष रूप से 14वीं शताब्दी में ब्रिटिश द्वारा "समुद्र के स्वामी" की घोषणा के बाद।

* सीमित ब्रिटिश विरासत: दो शताब्दियों तक भारत पर शासन करने के बावजूद, ब्रिटिशों ने आश्चर्यजनक रूप से एक मजबूत भारतीय नौसेना विकसित करने की उपेक्षा की। 19वीं शताब्दी में स्थापित रॉयल इंडियन नेवी अप्रासंगिक रही, जिससे नौसैनिक शक्ति के मामले में भारत को नुकसान हुआ।

भारत के लिए हिंद महासागर का महत्व:

* आर्थिक जीवन रेखा: हिंद महासागर भारत की आर्थिक भलाई के लिए एक महत्वपूर्ण धमनी के रूप में कार्य करता है। इसके बाहरी व्यापार का 80% और ऊर्जा आयात का 90% इन्हीं जल के माध्यम से पारगमन होता है। इसके अतिरिक्त, हिंद महासागर के समुद्री मार्ग दुनिया के 70% कंटेनर यातायात को संभालते हैं, जो वैश्विक व्यापार के लिए इसके महत्व को उजागर करता है।

* भूराजनीतिक और सभ्यतागत महत्व: हिंद महासागर सिर्फ एक भौगोलिक इकाई से कहीं अधिक है; यह भारत के लिए अत्यधिक भूराजनीतिक और सभ्यतागत महत्व रखता है। नाम ही ऐतिहासिक संबंधों को दर्शाता है, और सहस्राब्दियों के सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने इसके तटों के आसपास भारतीय प्रभाव के एक विशाल क्षेत्र को बढ़ावा दिया है।

* क्षेत्रीय नेतृत्व: किसी देश के नाम पर एकमात्र महासागर होने के कारण, हिंद महासागर भारत के लिए क्षेत्रीय नेतृत्व का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करता है। इस स्वाभाविक सद्भावना को पहचानते हुए, भारत ने पड़ोसी देशों के साथ जुड़ने के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं।

हिंद महासागर में भारत की स्थिति:

* समुद्री शक्ति में पिछड़ रहा है: अपनी ऐतिहासिक विरासत और रणनीतिक स्थिति के बावजूद, भारत वर्तमान में समुद्री शक्ति में पीछे है। यह वैश्विक शिपिंग टन भार में 15वें स्थान पर है और इसके पास चीन के 500 और अमेरिका के 400 की तुलना में 200 से भी कम लड़ाकू जहाज हैं, जो आधुनिकीकरण की आवश्यकता को उजागर करता है।

* बदलती रणनीतियाँ: जबकि भारतीय नौसेना और IORA जैसी पहलों का उद्देश्य सुरक्षा चिंताओं को दूर करना है, भारत तेजी से जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं और आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों जैसी गैर-पारंपरिक चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

बदलती गतिशीलता:

* पावर शिफ्ट इंडो-पैसिफिक की ओर: वैश्विक शक्ति धुरी प्रशांत-अटलांटिक से इंडो-पैसिफिक की ओर शिफ्ट हो रही है, जिससे हिंद महासागर भू-रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के केंद्र में है। इसके लिए क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

* नई चुनौतियाँ: पारंपरिक सुरक्षा चिंताओं से परे, भारत को जलवायु परिवर्तन, बढ़ते समुद्र स्तर और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में संभावित व्यवधान जैसी उभरती चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है। इन मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सक्रिय उपायों की आवश्यकता है।

भारत के लिए चुनौतियाँ:

* ऐतिहासिक उपेक्षा पर काबू पाना: इसकी नौसेना और समुद्री बुनियादी ढांचे में दशकों से कम निवेश एक महत्वपूर्ण चुनौती है। हिंद महासागर में अपना उचित स्थान हासिल करने के लिए जहाज निर्माण और नौसैनिक क्षमताओं का आधुनिकीकरण भारत के लिए महत्वपूर्ण है।

* सुरक्षा और गैर-पारंपरिक चुनौतियों को संतुलित करना: पारंपरिक सुरक्षा चिंताओं, समुद्री डकैती और जलवायु परिवर्तन जैसी गैर-पारंपरिक चुनौतियों के बीच जटिल अंतरसंबंध को सुलझाने के लिए एक सूक्ष्म और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

* क्षेत्रीय नेतृत्व बनाए रखना: चूंकि अन्य शक्तियां हिंद महासागर में प्रभाव के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं, इसलिए भारत को सहयोग को बढ़ावा देकर और पड़ोसी देशों के साथ अपने ऐतिहासिक संबंधों का लाभ उठाकर एक अग्रणी क्षेत्रीय खिलाड़ी के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखने की जरूरत है।

भारत के लिए आगे का रणनीतिक रास्ता:

* नौसेना क्षमताओं का आधुनिकीकरण: हिंद महासागर में भारत के हितों को सुरक्षित करने के लिए उन्नत तकनीक और जहाजों से सुसज्जित आधुनिक, नीले पानी वाली नौसेना में निवेश करना आवश्यक है।

* सक्रिय क्षेत्रीय जुड़ाव: भारत साझा चिंताओं पर क्षेत्रीय भागीदारों के साथ सक्रिय रूप से जुड़कर, आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने और आईओआरए जैसी पहलों के माध्यम से विश्वास का निर्माण करके अपनी नेतृत्व भूमिका को मजबूत कर सकता है।

* सभ्यतागत प्रभाव का लाभ उठाएं: भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक संबंध क्षेत्रीय सहयोग और स्थिरता को बढ़ावा देने में मूल्यवान संपत्ति हो सकते हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संवाद को बढ़ावा देकर, भारत हिंद महासागर में सद्भावना और साझेदारी का निर्माण कर सकता है।

उन्हें जीने दो

प्रसंग:

The Indian EXPRESS

* उत्तराखंड ने हाल ही में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) विधेयक पारित किया है, जिससे व्यक्तिगत कानूनों के प्रति इसके विवादास्पद दृष्टिकोण के कारण बहस छिड़ गई है।

* लेख में तर्क दिया गया है कि हालांकि यूसीसी के कुछ पहलू सकारात्मक हैं, लेकिन लिव-इन रिश्तों के प्रति इसका व्यवहार गहरा समस्याग्रस्त है।

पृष्ठभूमि:

* यूसीसी का लक्ष्य धर्म की परवाह किए बिना सभी नागरिकों के लिए व्यक्तिगत कानूनों का एक सामान्य सेट स्थापित करना है।

* भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में यह एक जटिल मुद्दा है और विभिन्न आवश्यकताओं में संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।

यूसीसी के साथ उत्तराखंड द्वारा लाई गई चुनौतियाँ:

1. नैतिकतावादी घुसपैठ:

* लिव-इन संबंधों के अनिवार्य पंजीकरण की आवश्यकता राज्य के निर्णयात्मक रुख को दर्शाती है।

* यह मानता है कि ऐसे सभी रिश्तों में "बुरे इरादे" होते हैं और निगरानी की आवश्यकता होती है, भले ही अधिकांश व्यक्तिगत पसंद और प्रतिबद्धता पर आधारित हों।

* यह नैतिक दृष्टिकोण लोगों द्वारा सहवास चुनने के विविध कारणों की उपेक्षा करता है, जिसमें आर्थिक स्वतंत्रता, धार्मिक मतभेद, या बस शादी से पहले प्रतिबद्धता की खोज करना शामिल है।

2. दुरुपयोग की संभावना:

* लिव-इन संबंधों का पंजीकरण न कराने को अपराध घोषित करने से अधिकारियों के हाथों में दुरुपयोग का एक शक्तिशाली उपकरण बन जाता है।

* यह विशेष रूप से रूढ़िवादी गुटों या पूर्वाग्रही अधिकारियों द्वारा जोड़ों के खिलाफ उत्पीड़न, जबरन वसूली और भेदभाव के दरवाजे खोलता है।

* सज़ा का डर व्यक्तियों को अवांछित विवाह के लिए मजबूर कर सकता है या उन्हें अपने रिश्तों को पूरी तरह से छिपाने के लिए मजबूर कर सकता है, जिससे उनकी स्वतंत्रता और सुरक्षा में बाधा आ सकती है।

3. स्वतंत्रता पर प्रतिबंध:

* यूसीसी अनिवार्य रूप से सहमति देने वाले वयस्कों को विवाह के बाहर सहवास चुनने के अधिकार से वंचित करता है।

* यह व्यक्तिगत मामलों में व्यक्तिगत स्वायत्तता और पसंद की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करता है, जो एक लोकतांत्रिक समाज में एक मौलिक सिद्धांत है।

* यह उन व्यक्तियों की विविध आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं की अनदेखी करते हुए रिश्तों के लिए एक आकार-फिट-सभी मॉडल मानता है जो विभिन्न कारणों से सहवास पसंद कर सकते हैं।

4. केंद्र सरकार से मतभेद:

* लिव-इन रिलेशनशिप के प्रति उत्तराखंड यूसीसी का दृष्टिकोण केंद्र सरकार की घोषित प्राथमिकताओं के बिल्कुल विपरीत है।

* युवाओं और महिला सशक्तिकरण पर प्रधान मंत्री मोदी का ध्यान व्यक्तिगत जीवन के पहलुओं सहित व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पसंद पर जोर देता है।

* यूसीसी, रिश्ते के विकल्पों को निर्धारित करके, इस दृष्टिकोण का खंडन करता है और केंद्र सरकार के व्यक्तिगत एजेंसी और सामाजिक परिवर्तन के व्यापक संदेश को कमजोर करता है।

5. समावेशिता का अभाव:

* यूसीसी, एकता को बढ़ावा देने के बजाय, उन समुदायों और व्यक्तियों को बाहर कर देता है जो गैर-पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं को चुन सकते हैं।

* समावेशिता की यह कमी समाज के कुछ वर्गों को अलग-थलग कर देती है और हाशिए पर रहने वाले समूहों के प्रति भेदभावपूर्ण रवैये को मजबूत करती है, जो सामाजिक कलंक या कानूनी बाधाओं के कारण सहवास का विकल्प चुन सकते हैं।

6. अनावश्यक जटिलताएँ:

* पंजीकरण प्रक्रिया स्वयं नौकरशाही बाधाओं और संभावित देरी को जोड़ती है, जो उन व्यक्तियों के लिए अनावश्यक जटिलताएँ पैदा करती है जो सहवास करना चुनते हैं।

* यह राज्य मशीनरी पर निजी जीवन के लिए बेहतर कार्यों का बोझ डालता है, संसाधनों को अधिक दबाव वाली चिंताओं से हटा देता है।

* कुल मिलाकर:

उत्तराखंड यूसीसी, कुछ पहलुओं में एकरूपता लाने का प्रयास करते हुए, लिव-इन संबंधों के अपने उपचार के माध्यम से गंभीर चिंताएं उठाता है। यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन करता है, संभावित दुरुपयोग के लिए द्वार खोलता है, और समावेशिता और व्यक्तिगत पसंद की व्यापक धारणाओं का खंडन करता है। एक अधिक सूक्ष्म और संवेदनशील दृष्टिकोण, व्यक्तिगत स्वायत्तता का सम्मान करना और विविध पारिवारिक संरचनाओं को पहचानना, वास्तव में प्रगतिशील और न्यायपूर्ण समाज के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रीलिम्स बूस्टर

- 📅 1991 में, **प्रधान मंत्री पी वी नरसिम्हा राव** ने एक चुनौतीपूर्ण अवधि के दौरान भारत को आर्थिक उदारीकरण की ओर अग्रसर किया।
- 💰 भुगतान संतुलन संकट और घटते विदेशी मुद्रा भंडार का सामना करते हुए, सरकार ने जुलाई 1991 में रुपये का दो-चरणीय अवमूल्यन शुरू किया।
- 🏦 तरलता का प्रबंधन करने के लिए, भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी मुद्रा उधार लेने के लिए अपने भंडार से 46 टन से अधिक सोना बैंक ऑफ इंग्लैंड को हस्तांतरित कर दिया।
- 🏭 एक ऐतिहासिक औद्योगिक नीति की शुरुआत ने अधिकांश परियोजनाओं के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग को समाप्त कर दिया और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के रास्ते खोल दिए।
- 👥 प्रधान मंत्री राव ने रणनीतिक रूप से सुधारों का श्रेय अपनी टीम को दिया, जिसमें वित्त मंत्री मनमोहन सिंह भी शामिल थे, जिन्हें राव का पूर्ण राजनीतिक समर्थन प्राप्त था।
- 🌐 अमर नाथ वर्मा, नरेश चंद्रा और मोंटेक सिंह अहलूवालिया जैसे व्यक्तियों सहित टीम ने आर्थिक उपायों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 📈 चुनौतियों के बावजूद, राव की आर्थिक उदारीकरण के प्रति प्रतिबद्धता और उनकी टीम के सक्रिय दृष्टिकोण ने भारत के आर्थिक परिदृश्य को सफलतापूर्वक बदल दिया।

- 🏅 केंद्र ने पूर्व प्रधान मंत्री और किसान नेता **चौधरी चरण सिंह** को राष्ट्र के लिए उनके महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देते हुए, मरणोपरांत भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, भारत रत्न देने की घोषणा की।
- 🌾 पीएम नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र निर्माण के प्रति सिंह के अटूट समर्पण, आपातकाल के प्रति उनके दृढ़ विरोध और चुनौतीपूर्ण समय के दौरान लोकतंत्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए उनके प्रेरणादायक नेतृत्व गुणों को रेखांकित किया।
- 🌱 भारत रत्न के लिए चौधरी चरण सिंह और डॉ. एम एस स्वामीनाथन का चयन कृषि क्षेत्र के प्रति मोदी सरकार की मजबूत प्रतिबद्धता और उन व्यक्तियों की मान्यता को दर्शाता है जिन्होंने भारत में कृषि के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- 🎖️ सिंह को यह पुरस्कार ऐसे समय में दिया गया है जब राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) के भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में शामिल होने की चर्चा चल रही है, जो वर्तमान परिदृश्य में संभावित राजनीतिक निहितार्थ और गठबंधन का संकेत दे रही है।
- 🚜 किसान परिवार में जन्मे चौधरी चरण सिंह उत्तर प्रदेश के एक प्रमुख नेता थे, जहां उन्होंने पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनाई और बाद में राष्ट्रीय राजनीति में शामिल हो गए, जिससे उस समय के राजनीतिक परिदृश्य पर स्थायी प्रभाव पड़ा।
- 💬 सिंह ने केंद्रीय गृह मंत्री और कुछ समय के लिए प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया, उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान गरीबी को खत्म करने और जीवन की बुनियादी आवश्यकताएं प्रदान करने की आवश्यकता पर जोर दिया, जो महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने पर उनके ध्यान को दर्शाता है।

- 🌾 **एम. एस. स्वामीनाथन**, जिन्हें 'हरित क्रांति के जनक' के रूप में जाना जाता है, ने 1960 और 70 के दशक में भारतीय खेती को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- 🌱 कृषि में स्वामीनाथन की रुचि बंगाल के अकाल और 1942 में गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन से जगी, जिससे उन्होंने अधिक उपज देने वाली फसल किस्मों को विकसित करने के लिए आनुवंशिकी और प्रजनन पर ध्यान केंद्रित किया।
- 🌾 1954 में, उन्होंने केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में काम करना शुरू किया, जहां उन्होंने बेहतर मिट्टी की उर्वरता और जल प्रबंधन के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से जैपोनिका से इंडिका किस्मों में उर्वरक प्रतिक्रिया के लिए जीन स्थानांतरित किया।
- 🌾 स्वामीनाथन का शोध गेहूं की फसलों तक विस्तारित हुआ, जहां अमेरिकी वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलॉग के साथ उनके सहयोग से अर्ध-बौनी गेहूं की किस्मों का विकास हुआ, जिससे भारत में 'गेहूं क्रांति' की शुरुआत हुई।
- 🌾 चुनौतियों के बावजूद, स्वामीनाथन के सहयोग के परिणामस्वरूप 'गेन्स' बौने गेहूं की किस्म का विकास हुआ, जिससे पैदावार में काफी वृद्धि हुई और तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी द्वारा स्वीकार किए गए परिवर्तनकारी युग को चिह्नित किया गया।
- 🌱 स्वामीनाथन की रणनीतिक दृष्टि ने भारत में हरित क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, पारंपरिक लम्बे और पतले गेहूं और चावल की किस्मों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का समाधान किया, भारत में खाद्य सुरक्षा और उत्पादन पर कृषि अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के महत्वपूर्ण प्रभाव को उजागर किया।

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org